



कर्नाटक सरकार

हिंदी सुमन

प्रथम भाषा हिंदी

Hindi First Language

Part - 2



सातवीं कक्षा

Seventh Standard

Karnataka Textbook Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,
Bengaluru - 560 003.

अनुक्रमणिका



क्र.स.	शीर्षक	विधा	पृ.सं.
10.	रक्षाबंधन	कविता	1
11.	कमलादेवी चट्टोपाध्याय	व्यक्ति चित्रण	4
	पंच परमेश्वर	पूरक वाचन	10
12.	बाल मज़दूरी : राष्ट्रकलंक	निबंध	12
13.	हम होंगे कामयाब	कविता	17
14.	कौन जीता ? कौन हारा ?	लोककथा	20
15.	बीदर की यात्रा	यात्रा-वृत्तांत	26
16.	दादू के दोहे	प्राचीन कविता	35
17.	दो थैलियाँ	एकांकी	41
	जगदीशचंद्र बोस	पूरक वाचन	52
	भाषा - बोध		54

पाठ - १०

रक्षाबंधन

-डॉ परशुराम शुक्ल



आशय: भाई-बहन के पवित्र संबंध की प्रगाढ़ता को दर्शानेवाला रक्षाबंधन त्योहार का महत्व समझने के साथ-साथ छात्र इस त्योहार को मनाने की विधि-से अवगत होंगे।

आज बहन ने बड़े प्रेम से,
रंग बिरंगा चौक बनाया।
इसके बाद चौक के ऊपर,
अपने भैया को बैठाया।।

रंग बिरंगी राखी बांधी,
फिर सुन्दर-सा तिलक लगाया।
गोल गोल रसगुल्ला खाकर,
भैया मन ही मन मुस्काया।।

थाल सजा कर दीप जला कर,
भाई की आरती उतारी।
मन ही मन में कहती बहना,
भैया रखना लाज हमारी।।

करना सदा बहन की रक्षा,
भैया तुमको समझाना है।
कच्चे धागों का यह बन्धन,
रक्षाबंधन कहलाता है।।

कवि परिचय:

डॉ परशुराम शुक्ल जी का जन्म ६ जून १९४७ को उत्तर प्रदेश के कानपुर में हुआ। आपने 'भारतीय वन्य जीव', 'भारतीय हिरन और गवय', 'जलचर कोश', 'मोघिया लोक कथाएँ', 'रेलों का विचित्र संसार' आदि २०० से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। समाज कल्याण-मंत्रालय और अनेक संस्थाओं द्वारा आप सम्मानित एवं पुरस्कृत हैं।

प्रस्तुत कविता-‘रक्षाबंधन’ आपकी ‘प्रतिनिधि बाल कविताएँ’ पुस्तक से उद्धृत है।

शब्दार्थ:

तिलक- टीका, लाज-मान, सदा-हमेशा

मौखिक प्रश्न:

१. बहन ने भाई को कहाँ बैठाया?
२. बहन ने भाई को क्या खिलाया?
३. मन ही मन बहन (भाई से) क्या कहती है?
४. भाई को क्या समझना है?

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

१. बहन ने रंग बिरंगा चौक किस भाव से बनाया?
२. बहन ने चौक क्यों बनाया?
३. चौक पर बिठाने के बाद बहन ने भाई को क्या बाँधा ?
४. बहन ने भाई की आरती कैसे उतारी?
५. भाई को किसकी लाज रखनी चाहिए?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए:

१. भाई के साथ बहन रक्षाबंधन कैसे मनाती है?
२. रक्षाबंधन के दिन बहन मन ही मन क्या सोचती है?
३. रक्षाबंधन का आशय क्या है?

III. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए:

१. इस कविता का सार लिखिए।
२. डॉ. परशुराम शुक्ल जी का परिचय लिखिए।

IV. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

१. रंग बिरंगा _____ बनाया।
२. सुंदर-सा _____ लगाया।
३. भाई की _____ उतारी।
४. भैया रखना _____ हमारी।

V. जोड़कर लिखिए:

१. तिलक - हमेशा
२. सदा - दीया
३. लाज - टीका
४. दीप - मान

VI. भावार्थ लिखिए :

मन ही मन में कहती बहना,
भैया रखना लाज हमारी।।
करना सदा बहन की रक्षा,
भैया तुमको समझना है।
कच्चे धागों का यह बंधन,
रक्षाबंधन कहलाता है।।

योग्यता विस्तार:

- नाग पंचमी त्योहार के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर कक्षा में चर्चा कीजिए।



आशय : कर्नाटक में जन्मी, पत्नी श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय महान् स्वतंत्रता-सेनानी, समाज सुधारक एवं कला-प्रेमी हैं। इनका जीवन नारी-उद्धार तथा हस्त-कला विकास के लिए संपूर्ण रूप से समर्पित था। दीदी कमला देवी का जीवन त्याग, बलिदान तथा समाज-सेवा का प्रतीक है।

कमलादेवी का जन्म ३ अप्रैल, १९०३ को कर्नाटक के मंगलूरु नगर में हुआ। इनकी माता का नाम था गिरिजाबाई और इनके पिता का नाम था अनंतय्या धारेश्वर। कमलादेवी की माँ प्रगतिशील दृष्टिकोण रखनेवाली थी जबकि पिता जिलाधीश होते हुए भी सरल जीवन बितानेवाले थे।

वे दिन स्वतंत्रता-आंदोलन के थे। मंगलूरु बड़ा शिक्षा-केंद्र था। वहाँ पढ़े-लिखे लोगों की तादाद भी बड़ी थी।

स्वतंत्रता-आंदोलन को फैलाने देश के विख्यात नेता मंगलूरु आया करते थे। सन् १९१६ में डॉ. अनिबिसेंट और सन् १९१७ में महात्मा गांधी ने वहाँ पधार कर स्वतंत्रता का शंखनाद किया था।

बालिका कमला उन दोनों के भाषणों से बहुत प्रभावित हुई। कमलादेवी का विवाह श्री हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय से सन् १९१९ में हुआ। श्री हरींद्र 'भारत कोकिला' श्रीमती सरोजिनी नायडु के छोटे भाई थे। वे कवि, नाटककार, अभिनेता एवं गायक थे।



कमलादेवी बचपन से ही समाज सेवा के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया करती थीं। वे सन् १९२४ में एन. एस. हर्डिकर जी के सेवादल की सक्रिय कार्यकर्ता बनीं। वे थोड़े ही समय में सेवादल के महिला-विभाग की प्रधान सचिवा भी बनीं।

कमलादेवी दयामयी और करुणालु थीं। वे महिलाओं की दुर्दशा दूर करने के बारे में सोचा करती थीं। स्त्रियों की अशिक्षा, परावलंबन, गरीबी एवं दयनीयता उन्हें बहुत खटकती थी। बाल्य-विवाह के कारण छोटी-छोटी बच्चियाँ वैधव्य की शिकार होकर नारकीय यातना भुगतती थीं। कमलादेवी नारियों के जीवन में आशा की ज्योति जला कर उनके जीवन के अँधेरे को भगाने के लिए कटिबद्ध हुईं।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने बालिकाओं के लिए जगह-जगह पाठशालाएँ खोलीं। युवतियों के लिए महाविद्यालयों तथा प्रौद्योगिक महाविद्यालयों (Polytechnic Colleges) की स्थापना कीं। कमलादेवी का आशय था कि स्त्रियाँ भी पढ़-लिख कर कमाऊ होकर अपने पैरों पर आप खड़े हो जाएँ। वे चाहती थीं कि पुरुषों की तरह महिलाएँ भी चार पैसे कमा कर घर का निर्वाह करने में मददगार बनें। कमला जी स्त्रियों के स्वावलंबन पर बल देती थीं।

कमलादेवी सर्वतोमुखी विकास के कार्यों में तन-मन-धन से जुट गईं। खास कर उन्होंने बाल-विवाह का जोरदार खंडन किया। बाल-विवाह के दुष्परिणामों से स्त्रियों का परिचय कराया। उन्होंने मंगलूरु तथा उसके आसप-आस के प्रदेशों में महिला मज़दूर संघों की स्थापना भी की। कल-कारखानों में महिला स्वास्थ्य-केन्द्रों की स्थापना भी कीं। कमलादेवी जी ने परिवार-योजना की जरूरत महसूस करायी। वे हर कदम पर नारी के अधिकारों के लिए लड़ती रहीं। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने कारावास के दौरान महिला कैदियों के लिए आवश्यक सुविधाओं को भी उपलब्ध कराया। कमलादेवी को सारे भारत की स्त्रियाँ बड़े प्यार से 'दीदी' कहकर पुकारती थीं। अखिल भारतीय महिला संघ के द्वारा उन्होंने स्त्रियों की अनुपम सेवा की।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय स्वतंत्रता सेनानी थीं। वे आज़ादी के आंदोलन में कूद कर कई बार जेल भी गईं। वे सन् १९३० में नमक सत्याग्रह के दौरान जेल जानेवाली सर्वप्रथम महिला थीं। उन्हें 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भाग लेने के कारण सन् १९४२ में पच्चीस महीने तक कैदखाने में मुसीबतें झेलनी पड़ीं। वे समाज के बीच में रहीं हों या जेल की चार दीवारों के बीच, सभी की आज़ादी या खुशहाली के लिए लड़ीं। वे मानवतावाद की सुंदर प्रतीक थीं।

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने भारतीय हस्तकला के क्षेत्र में अनुपम योगदान दिया है। उन्होंने न्यूयार्क में १९६४ में संपन्न विश्व हस्त-कला अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया। उस संस्था की उपाध्यक्षा के रूप में चुनी गईं। भारत के विविध राज्यों में ग्रामीण और आदिवासी अपने हस्त-कलाशिल्प के लिए मशहूर हैं। कमलादेवी ने इन अज्ञात कलाकारों को बढ़ावा देने के लिए भारतीय हस्त-कला परिषद की स्थापना की। देश के अनेक राज्यों में इस संस्था की शाखाएँ खोली गईं। उनके अथक प्रयत्न के कारण लाखों हस्त-कलाकारों का जीवन सुधर गया। भारतीय हस्त-कला की धूम सारे संसार में मच गई।

कमलादेवी को नाटकों में बड़ी रुचि थी। उनके पति हरींद्रनाथ नाटककार और कुशल अभिनेता थे। कमलादेवी ने नाटकों में अभिनय भी किया था। उन्होंने भारतीय नाट्य संघ की स्थापना की थी। उन्होंने केंद्र नाटक अकादमी की अध्यक्षता के रूप में भारतीय नाटक कला के विकास में बड़ी सेवा की।

उनकी कला-सेवा के लिए उन्हें सन् १९६६ में विश्वविख्यात रेमन मेगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसी वर्ष उन्हें कला-सेवा के लिए ज़ेकोस्लो-वेकिया राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुआ। कमलादेवी चट्टोपाध्याय की प्रतिभा बहुमुखी थी। शिक्षा, सहकारिता, समाज-सुधार, स्वतंत्रता-आंदोलन, कला आदि क्षेत्रों में उनकी सेवा अतुलनीय है। सन् १९७० में विश्व भारती विश्वविद्यालय ने उन्हें देशिकोत्तम (मानद डी. लिट) पदवी से विभूषित किया। भारत सरकार ने कमलादेवी की अपार सेवा को पहचान कर उन्हें 'पद्मविभूषण' पुरस्कार से अलंकृत किया।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय भारत देश की अनुपम सेवा करके सन् १९८८ में मुंबई में चल बसीं।

शब्दार्थ:

प्रगतिशील दृष्टिकोण-सबकी तरक्की चाहनेवाली भावना, विख्यात - मशहूर, पधारना-आना , अभिनेता-अभिनय करनेवाला, अदाकार; दुर्दशा-बुरी हालत, परावलंबन-दूसरों पर निर्भर होना , नारकीय यातना-नरक के कष्ट याने बहुत कष्ट सहना , कटिबद्ध होना-कमर कसना, तैयार होना; कमाऊ-कमाने लायक, निर्वाह करना-सँभालना, मददगार-सहायक, स्वावलंबन-किसी पर निर्भर न होना, जुट जाना-पूरी तरह लग जाना, दुष्परिणाम-बुरा असर, खुशहाली-भलाई; हस्त-कला — हाथों से तरह-तरह की चीज़ें बनाने की कला(Handi craft); अज्ञात-अपरिचित, जिनकी जानकारी न हो; अतुलनीय-बड़ी, महान, जिसकी कोई तुलना न हो।

अभ्यास

मौखिक प्रश्न :

१. कमलादेवी चट्टोपाध्याय का जन्म कहाँ हुआ?
२. कमलादेवी के माता-पिता के क्या नाम हैं?
३. बालिका कमला किनके भाषणों से प्रभावित हुई?
४. कमलादेवी का विवाह किससे हुआ?

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

१. कमलादेवी ने बालिकाओं के लिए क्या किया?
२. कमलादेवी 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय जेल में कितने महीने रहीं?
३. कमला जी को रेमन मेगसेसे पुरस्कार किस के लिए दिया गया?
४. भारत सरकार ने कमलादेवी को किस पुरस्कार से सम्मानित किया?

II. इन प्रश्नों का तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. कमला देवी को अपने माता-पिता से कौन-से संस्कार मिले?
२. कमला देवी को किन-किन नेताओं ने प्रभावित किया? और कैसे?
३. कमला देवी को बचपन में समाजसेवा करने की प्रेरणा किससे मिली? और कैसे?
४. कमला देवी ने स्त्रियों की सेवा कैसे की?
५. कमलादेवी ने भारतीय हस्त-कला क्षेत्र में क्या-क्या सेवाएँ कीं?
६. कमला देवी को कौन-कौन-से पुरस्कार मिले हैं?

III. इन शब्दों के विरोधार्थक रूप लिखिए:

नगर	सक्रिय	स्वतंत्रता	आशा
दया	आजादी	स्वावलंबन	अज्ञात

IV. इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

शंखनाद करना, नारकीय यातना भुगतना, आशा की ज्योति जलाना, अपने पैरों पर आप खड़े होना, तन-मन-धन से जुट जाना

V. रिक्त स्थान भरिए :

१. वे की सुंदर प्रतीक थीं।
२. उनकी कला सेवा के लिए विश्वविख्यात पुरस्कार मिला है।
३. श्रीमती सरोजिनी नायडू को कहा जाता है।
४. कमला देवी नारियों के अंधकार भरे जीवन में बन गईं।
५. उन्होंने अज्ञात कलाकारों को बढ़ावा देने के लिए भारतीय की स्थापना की।

VI. अन्य लिंग शब्द-लिखिए:

१. जिलाधीश	-	५. गायक	-
२. उपाध्यक्ष	-	६. सेवक	-
३. अध्यक्ष	-	७. युवक	-
४. बालक	-		

VII. उदाहरण के अनुसार लिखिए :

उदाहरण : नाटक लिखनेवाला - नाटककार

१. साहित्य की रचना करनेवाले - _____
२. कहानी लिखनेवाला - _____
३. नृत्य करनेवाला - _____
४. उपन्यास लिखनेवाला - _____
५. चित्र लिखनेवाला - _____

VIII. क्रिया-विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए :

१. बालिका कमला भाषणों से बहुत प्रभावित हुई।
२. कमला जी स्त्रियों के स्वावलंबन पर ज्यादा बल देती थीं।
३. कमला जी ने बाल विवाह का जोरदार खंडन किया।
४. उन्होंने स्त्रियों की अनुपम सेवा की।
५. वे आंदोलन में कूदकर कई बार जेल गयीं।
६. उन्होंने भारतीय नाटक कला के विकास में बड़ी सेवा की।

योग्यता विस्तार :

- कमलादेवी की तरह समाजसेवा करनेवाली अन्य महिलाओं की जानकारी हासिल कीजिए ।
- तुम समाज सेवा किस प्रकार कर सकते हो, सोचो, विचारो, लिखो।

पूरक वाचन पंच परमेश्वर

-प्रेमचंद

किसी गाँव में दो मित्र रहा करते थे। एक का नाम जुम्मन शेख और दूसरे का अलगू चौधरी था। जुम्मन की एक मौसी थी, जिसके पास कुछ ज़मीन थी। जुम्मन उस ज़मीन को हड़पना चाहता था। इसलिए वह मौसी को अपने पास रखे हुए था। जुम्मन अपने पास से मौसी को दाल-रोटी खिलाया करता था। मौसी को खुश रखने के लिए जुम्मन उसकी देखभाल का नाटक भी किया करता था। मौसी झाँसे में आ गई। उसने अपनी ज़मीन जुम्मन के नाम लिखवा दी।

कचहरी से ज़मीन पाने का आदेश पाते ही, जुम्मन का नाटक बंद हो गया। उसने मौसी की सेवा से मुँह मोड़ लिया। उसके घरवालों ने मौसी की देखभाल करना बंद कर दिया।

विवश होकर मौसी ने ग्राम पंचायत के दरवाज़े खटखटाए। शाम को पंचायत बैठी। पंचों ने मौसी से कहा कि अपने मामले में फ़ैसला करने के लिए वह एक सरपंच चुन ले। मौसी ने इसके लिए अलगू चौधरी का नाम सुझाया। अपने मित्र अलगू चौधरी का नाम सुनते ही जुम्मन खुश हो गया। उसने कहा - “मुझे अलगू चौधरी का नाम मंजूर है।”

सरपंच बनने के बाद अलगू ने दोनों पक्षों की बातें सुनी। अपना फ़ैसला सुनाते हुए उसने कहा- “मौसी की बातें ठीक हैं। जुम्मन को चाहिए कि वह मौसी के लिए महीना बाँध दे।”

फ़ैसला सुनकर जुम्मन का दिल टूट गया। उसे अपने मित्र से ऐसी उम्मीद न थी। उस दिन से वह अलगू का पक्का दुश्मन बन गया। मन ही मन उसने कहा कि मैं अलगू से इसका बदला ज़रूर लूँगा।

अलगू के पास खेत जोतने के लिए बैलों की एक जोड़ी थी। एक दिन जोड़ी का एक बैल मर गया। बाकी रह गए बैल को उसने तेली के हाथ बेच दिया। तेली ने कहा- “अभी पैसे नहीं हैं, मैं अगले महीने पैसे चुका दूँगा।”

तेली के यहाँ बैल को खराब और कम खाना मिलता था। ऊपर से तेली बैल से काम भी बहुत ज़्यादा लेता था। बैल कमज़ोर हो गया और एक महीने के भीतर ही मर गया। तेली ने अलगू को बैल के दाम नहीं दिए। अलगू पैसे माँगते-माँगते थक गया।

अंत में अलगू ने पंचायत की शरण ली।

शाम को पंचायत बैठी। तेली को मालूम था कि अलगू जुम्मन का पक्का दुश्मन है। इसलिए तेली ने अपने मामले के लिए जुम्मन शेख को अपना सरपंच चुना। जुम्मन को अलगू से बदला लेने का मौका मिल गया। पंचायत में जुम्मन ने दोनों पक्षों की बातें सुनीं। उसने अपने मन में सोचा- “पंच तो परमेश्वर के बराबर होता है। उसे न्याय का ही पक्ष लेना चाहिए। उसका न कोई दोस्त होता है, न दुश्मन।”

जुम्मन ने फ़ैसला सुनाते हुए कहा- “अलगू चौधरी की बात ठीक है। तेली को चाहिए कि वह बैल के दाम चुका दे।”

जुम्मन का फ़ैसला सुनकर सब लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। सब लोगों ने एक साथ कहा- “पंच परमेश्वर की जय!”

प्रश्नों का उत्तर लिखिए :

१. मौसी की ज़मीन हड़पने के लिए जुम्मन क्या करता था ?
२. जुम्मन और अलगू के बीच की दुश्मनी का कारण बताइए।
३. अलगू तथा तेली के बीच के सौदे के बारे में लिखिए।
४. तेली का बैल क्यों मर गया?
५. तेली ने जुम्मन को अपना सरपंच क्यों चुना?
६. जुम्मन का फ़ैसला क्या था?
७. फ़ैसला सुनकर सब लोगों ने क्या कहा?



बाल-मज़दूरी:राष्ट्रीय कलंक

-संकलित

आशय : बच्चे समाज की संपत्ति है। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। बच्चों की खुशहाली में ही देश का भविष्य निर्भर होता है। इन्हें आवश्यक शिक्षा प्रदान करके देश को मज़बूत बनाना है। इसके लिए बाल-मज़दूरी को खतम करना है। प्रस्तुत पाठ में इस समस्या पर प्रकाश डाला गया है। कई खतरे भरे स्थानों में बाल-मज़दूर काम करते हैं। बाल-मज़दूरी राष्ट्रीय कलंक मानी जाती है। बाल-मज़दूरी देश के लिए एक अभिशाप है।

मासूम, कोमल बच्चे हँसते-खेलते हुए ही अच्छे लगते हैं। जीवन की प्रत्येक चिंता से मुक्त मुस्कुराता हुआ बचपन जीवन की अनमोल धरोहर है। यह बचपन जीवनपर्यंत स्मृति में रहता है। न जीवनयापन का बोझ, न ही कर्तव्य-पालन की चिंता, केवल हँसना-खेलना और जीवन जीने की कला को सीखने का प्रयास करना, यही होता है बचपन। परंतु कुछ मासूम चेहरों का दुर्भाग्य उनके कोमल कंधों पर जिम्मेदारी का भारी बोझ डाल देता है और इस प्रकार जन्म लेती है बाल-मज़दूरी। हमारे विशाल भारत में प्रत्येक नगर-महानगर में, गाँव-कस्बे में मासूम बचपन मज़दूरी करते हुए देखा जा सकता है। यद्यपि सरकार ने बाल-मज़दूरी पर प्रतिबंध लगाया है, परंतु जनसंख्या-वृद्धि और गरीबी बाल-मज़दूरी को रोकने में बाधक बनी हुई हैं।

बच्चों को देश का भविष्य कहा जाता है। हँसते-खेलते हुए बच्चे, शिक्षा ग्रहण करते हुए योग्य नागरिक बनने की दिशा में जब आगे बढ़ेंगे, तभी देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकेगा। परंतु जिस देश में बचपना मिल-कारखानों में, खेत-खलिहानों में, ढाबों-चाय की दुकानों में पिसता-सिसकता रहेगा, उस देश का भविष्य कैसा होगा-अशिक्षित और बीमार। वास्तव में बाल-मज़दूरी किसी भी राष्ट्र के लिए कलंक के समान है। जिन बच्चों को माता-पिता का प्यार-दुलार मिलना चाहिए, उन्हें मिल-मालिकों, होटल-मालिकों की गालियाँ सुननी पड़ती है। जिस आयु में शिक्षा ग्रहण करके योग्यता अर्जित करनी चाहिए, उस

आयु में प्रदूषित कारखानों में बीमारियों से लड़ना पड़ता है। वास्तव में बाल-मजदूरों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। बीड़ी, दीयासलाई, आतिशबाजी आदि के कारखानों में सस्ती दर पर उपलब्ध होने के कारण बाल-मजदूरों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है। इन कारखानों में बाल-मजदूरों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और उनके लिए चिकित्सा की भी समुचित व्यवस्था नहीं होती। अपनी जान जोखिम में डालकर मासूम बच्चे मिल-कारखानों में काम करते हैं।

स्पष्टतया बाल-मजदूरी का प्रमुख कारण गरीबी है। घर पर भुखमरी के शिकार बच्चे ही ज्यादातर मजदूरी करने पर विवश होते हैं। गरीब परिवारों में एक व्यक्ति की आय से परिवार का भरण-पोषण संभव नहीं होता। अज्ञान और अशिक्षा के कारण परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ती रहती है। अतः सभी के भरण-पोषण के लिए होश संभालते ही परिवार के बच्चों को मेहनत-मजदूरी करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। घर से भागे हुए बच्चों को भी पेट की भूख शांत करने के लिए मजदूरी करने पर विवश होना पड़ता है। इन बच्चों की विवशताओं का लाभ मिल-मालिक, ढाबा-मालिक उठाते हैं। वे बच्चों से दिन-रात काम लेते हैं और मेहनताना नाम मात्र को देते हैं। कोठी-बंगलों में काम करनेवाले घरेलू नौकरों की स्थिति भी गुलामों से कम नहीं है। घरेलू बाल-मजदूरों को देर रात तक काम करना पड़ता है और मालिकों की गालियाँ भी सुननी पड़ती है। अनेक बाल-मजदूरों को मालिकों द्वारा बेरहमी से पीटने की भी घटनाएँ सुनने-पढ़ने में आई हैं।

बाल-मजदूरी दंडनीय अपराध होने पर भी मजदूरी के लिए बच्चों का निरंतर शोषण किया जा रहा है। वास्तव में केवल कानून बनाने से गरीब बच्चों के जीवन में विशेष सुधार होना सम्भव नहीं है। गरीब परिवारों के पेट की भूख बच्चों को मजदूरी के लिए विवश करती है। इस समस्या के निवारण के लिए सरकार को गरीब बच्चों के लालन-पालन और शिक्षा की जिम्मेदारी लेनी होगी। समाज के संपन्न नागरिकों को भी गरीब बच्चों की सहायता के लिए यथासंभव प्रयास करना चाहिए। देश का भविष्य माने जानेवाले बच्चों के विकास के लिए

समाज में जागरूकता की आवश्यकता है। बच्चों का शोषण करनेवाले मिल-मालिकों, होटल-मालिकों आदि को भी विचार करने की आवश्यकता है कि अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए वे मासूम बच्चों पर अत्याचार करके पाप के भागी बन रहे हैं।

निस्संदेह किसी भी देश के बच्चे उसके भविष्य हैं। यह भी आवश्यक नहीं है कि प्रतिभा पर केवल धनवान परिवार के बच्चों का अधिकार हो। प्रतिभा गरीब बच्चों में भी होती है। अतः प्रत्येक वर्ग के बच्चों को स्वस्थ, शिक्षित और योग्य होना आवश्यक है, तभी देश का भविष्य उज्जल हो सकता है। देश के उज्जल भविष्य के लिए हमें बाल-मज़दूरी के कलंक को मिटाने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयास करना चाहिए।

शब्दार्थः

मुक्त-स्वतंत्र, खुला; मासूम - अबोध, अनमोल - कीमती, धरोहर - विरासत, स्मृति - याद, बचपन - लड़कपन, प्रतिबंध - रुकावट, प्रतिरोध; बाधक-रुकावट, अड़चन; उज्ज्वल-प्रकाशमान, कलंक-दाग, धब्बा; अर्जित करना-कमाना; प्रदूषित-कलुषित, गंदा; आतिशबाजी-कई रंगीन पटाखे, प्राथमिकता - प्रधानता, चिकित्सा-इलाज, उपचार; व्यवस्था - प्रबंध, जोखिम - खतरा, संकट; विवश - लाचार, मेहनताना - मजूरी, वेतन; बेरहमी - निर्दयता, दंडनीय-सज़ा के योग्य, निरंतर-सदा, हमेशा; संपन्न - अमीर, धनी; यथासंभव - जितना हो सके, युद्धस्तर - बड़े पैमाने पर, जोरों से।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. मासूम कोमल बच्चे कैसे अच्छे लगते हैं?
2. कुछ बच्चों का दुर्भाग्य कैसा होता है?
3. बाल-मज़दूरी को कहाँ-कहाँ देख सकते हैं?
4. बाल-मज़दूरी का प्रमुख कारण क्या है?

५. बाल-मज़दूरी के समस्या-निवारण के लिए सरकार को क्या करना है?
६. देश का भविष्य कब उज्ज्वल हो सकता है?

II. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए :

१. बचपन के लक्षण क्या हैं?
२. बाल-मज़दूरी की स्थिति कैसी होती है?
३. बाल-मज़दूरी दूर करने के उपाय क्या हैं?
४. देश का भविष्य उज्ज्वल होने के लिए बच्चों की स्थिति कैसी होनी है?

III. वाक्य बनाइए :

उदा : खेत-खलिहान

किसान खेत-खलिहान में ही ज़्यादा समय बिताते हैं।

१. हँसते-खेलते :
२. अनमोल धरोहर :
३. जीने की कला :
४. उज्ज्वल होना :
५. योग्यता अर्जित करना :
६. प्राथमिकता देना :
७. विवश होना :
८. शोषण करना :

IV. पाठ में से चुनकर दस शब्द-युग्मों की सूची बनाइए :

जैसे: हँसते-खेलते

- | | | | | | |
|----------|---|-------|-----------|---|-------|
| १. नगर | - | _____ | ६. माता | - | _____ |
| २. गाँव | - | _____ | ७. प्यार | - | _____ |
| ३. मिल | - | _____ | ८. भरण | - | _____ |
| ४. खेत | - | _____ | ९. लालन | - | _____ |
| ५. पिसता | - | _____ | १०. मेहनत | - | _____ |

V. अन्य वचन रूप लिखिए :

- | | |
|-------------------|---------------------|
| १. चिंता - _____ | ६. व्यवस्था - _____ |
| २. चेहरा - _____ | ७. परिवार - _____ |
| ३. कस्बा - _____ | ८. नौकर - _____ |
| ४. गाली - _____ | ९. गुलाम - _____ |
| ५. बीमारी - _____ | १०. समस्या - _____ |

VI. जनसंख्या वृद्धि बाल-मजदूरी को रोकने में बाधक बनी हुई है। इसी प्रकार जनसंख्या वृद्धि से होनेवाली अन्य पाँच समस्याएँ लिखिए:

१. _____
२. _____
३. _____
४. _____
५. _____

VII. संधि-विच्छेद करके संधि का नाम लिखिए:

- | | | | |
|-------------|---|----------|----------|
| 1. प्रत्येक | - | प्रति+एक | यण् संधि |
| 2. यद्यपि | - | _____ | _____ |
| 3. अत्याचार | - | _____ | _____ |
| 4. पावन | - | _____ | _____ |
| 5. पवन | - | _____ | _____ |

योग्यता विस्तार:

- 'मद्यपान के दुष्परिणाम' इस विषय पर एक छोटा-सा निबंध लिखिए।

हम होंगे कामयाब

-गिरिजाकुमार माथुर



आशय: जीवन जीने के लिए है। जीवन-यात्रा में कदम-कदम पर हमें मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। तब हमें उनसे नहीं डरना चाहिए। हमें विश्वास और हिम्मत के साथ आगे बढ़ना चाहिए। तब हम जरूर विजयी होंगे।

होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब एक दिन

मन में है विश्वास

पूरा है विश्वास

हम होंगे कामयाब एक दिन ॥

होगी शांति चारों ओर

होगी शांति चारों ओर

होगी शांति चारों ओर..... एक दिन

मन में है विश्वास

पूरा है विश्वास

हम होंगे कामयाब..... एक दिन ॥

नहीं डर किसी का आज

नहीं भय किसी का आज

नहीं डर किसी का आज के दिन

मन में है विश्वास

पूरा है विश्वास

हम होंगे कामयाब एक दिन ॥

कवि परिचय:

श्री गिरिजाकुमार माथुर (१९१९ - १९९४) प्रयोगवादी कवि के रूप में हिंदी काव्य-जगत में आए। लेकिन वे सरल, स्पष्ट और सहज रीति से मानव के सुख-दुःख को प्रकट करनेवाले कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनके काव्य - संकलनों में 'नाश और निर्माण', 'धूप के धान', 'शिला-पंख चमकीले' तथा 'वक्त के सामने खड़ा हुआ हूँ मैं' सुप्रसिद्ध हैं। इनकी कविता में जीवन के प्रति आस्था और विश्वास की सुंदर अभिव्यक्ति पाई जाती है।

शब्दार्थ:

कामयाब - सफल, विजयी।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. एक दिन हम क्या होंगे?
२. मन में क्या है?
३. चारों ओर क्या होगी?
४. आज हमें क्या नहीं है?

II. इस कविता का सारांश पाँच-छः वाक्यों में लिखिए।

III. विलोम शब्द लिखिए :

कामयाब, विश्वास, शांति, पूरा, भय

IV. परीक्षा में कामयाबी हासिल करने के लिए आप क्या-क्या करेंगे?

V. चारों ओर शांति की स्थापना के लिए अनेकता में एकता की आवश्यकता है। आप कोई ऐसे पाँच विषय लिखिए जिनमें आपको अनेकता दिखाई देती हो:

उदा: आहार-विहार में अनेकता है।

१. आचार - _____

२. _____

३. _____

४. _____

५. _____

VI. आपको कई बार कई विचारों पर डर लगता है। लेकिन आप उस डर को दूर करने की कोशिश करते होंगे। अब आप कोई ऐसी पाँच बातें लिखिए जिनसे आपको डर लगता हो और किस प्रकार आप उसे दूर करने की कोशिश करते हों:

जैसे : परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का डर लगता है।

दिन-रात पढ़ाई करके उस डर को दूर करने की कोशिश करता/करती हूँ।

१. _____

२. _____

३. _____

४. _____

५. _____

योग्यता विस्तार:

- जीवन के प्रति आस्था और विश्वास भरनेवाली अपनी मातृभाषा की कोई कविता पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

कौन जीता? कौन हारा?



छत्तीसगढ़ की लोककथा

आशय : स्त्री और पुरुष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। दोनों का समान गति से चलने पर ही जीवन सुखमय हो पाता है। दोनों के बीच समरसता होनी चाहिए। आदमी और औरत में न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। एक गोंड और गोंडिन के बीच में बुद्धि की परीक्षा होती है तो दोनों चतुर निकले। दोनों के बीच स्नेह-भाव पैदा हुआ और दोनों विवाह के सूत्र में बंध गए। जीवन में समझौता और समरसता की आवश्यकता पर बल देती है-यह लोककथा।

छत्तीसगढ़ में गोंड जाति बहुत चतुर मानी जाती है, तो उस चतुराई का एक उदाहरण इस कहानी में प्रस्तुत है।

किसी गाँव में एक अत्यंत चतुर गोंडिन अकेली ही रहती थी। परिवार का कोई भी सदस्य उसके साथ नहीं था। निर्भीक होने के साथ-साथ वह स्वावलंबी भी थी। अभी तक उसका विवाह नहीं हुआ था। विवाह के अनेक प्रस्ताव उसके पास आते थे, किंतु उसका यह निश्चय था कि वह प्रस्ताव स्वीकारने के पूर्व सबकी परीक्षा लेगी। जो भी व्यक्ति उस परीक्षा में खरा उतरेगा अथवा यों कहें कि जो व्यक्ति उसे हरा देगा, तब गोंडिन आए हुए विवाह-प्रस्ताव पर हामी भर देगी। कुतूहल होता है आखिर गोंडिन की परीक्षा थी किस प्रकार की। वह व्यक्ति के सब्र या धैर्य तथा विवाह-प्रस्ताव के प्रति सच्चाई को परखती थी। यही उसकी परीक्षा थी जिसमें अनेक गोंड असफल हो चुके थे। किंतु एक गोंड इस निश्चय से गोंडिन के घर आया कि वह गोंडिन को हरा कर उससे विवाह करके ही अपने घर वापस लौटेगा। दृढ़ निश्चय के समक्ष सभी कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं।

एक दिन गोंडिन ने देखा कि उसका स्वजातीय घर आया। उसके आगमन का अभिप्राय गोंडिन समझ गई और उसने कहा - “तुम मेरे मेहमान हो, तुम्हारा आतिथ्य करना मेरा धर्म है। पर मैं तो गरीब हूँ मेरे पास कुछ अन्न नहीं। मैं गाँव

में किसीके यहाँ से चावल-दाल, आटा माँगकर लाती हूँ ताकि तुम्हें भोजन दे सकूँ। तुम यहीं बैठो, मैं अभी लौट आती हूँ।” यह कह कर वह चली गई और बहुत शाम होने पर वह घर लौटी, तो उसके विस्मय का ठिकाना न रहा। उसने पाया कि वह अतिथि वहीं विराजमान था। उसे ऐसी उम्मीद न थी क्योंकि कितनी ही बार उसने आए हुए मेहमानों के साथ ऐसा किया था पर कोई भी उसके लौटने तक नहीं रुका था। इसलिए उसका विस्मित होना स्वाभाविक ही था। पर इधर अतिथि भी दृढ़ था। किंतु गोंडिन इतनी चतुर थी कि उसने कहा कि गाँव के किसी घर से उसे अन्न प्राप्त नहीं हुआ और अब वह आए हुए गोंड को क्या खिलाए।

इतना सुनना था कि गोंड ने अपना नाटक शुरू किया। अचानक वह डर के मारे थर-थर काँपने लगा। गोंडिन को आभास हुआ कि शायद यह ज्वरग्रस्त है पर पूछने पर गोंड ने इसका कारण यों प्रतीकात्मक ढंग से बतलाया, “इस घर में दो बड़े-बड़े साँप हैं जिनकी लंबाई गन्ने के बराबर है, उन साँपों के दाँत उतने ही श्वेत हैं जितने तुम्हारे घर में काली मटकी में रखे चावल हैं। उनकी आँखें वैसी ही चमक रही थीं जैसे तुम्हारे घर मटकी में मसूर की दाल है।” इतना कह कर गोंड अपनी सूझ-बूझ को मन ही मन सराहते हुए मुस्कराया।

गोंडिन तुरंत समझ गई कि इसने घर का सब कुछ देख लिया है, उसे खीझ तो बहुत आयी पर खीझ को हँसी के आवरण में ढाँकते हुए उसने यह बात उसे जता दी कि तुम तो बहुत ही होशियार निकले जो सब देख लिया। यह कह उसने अतिथि को गन्ना चूसने को दिया और खाना बनाने में लग गई। जब भोजन पक चुका तो वह तालाब से पीने का पानी लेने चली। इस बीच गोंड ने ताका -झाँकी कर घी का भी पता लगा लिया। गोंडिन लौट कर आयी, उसने थाली लगाई। गोंड ने देखा दाल में घी नहीं पड़ा है, उसने घी माँगा फिर गोंडिन ने घी न होने का सफेद झूठ कहा, तो गोंड, जो इस बीच में जमे हुए घी को आग में चढ़ा कर पिघला चुका था, बोला कि ऐसा करो कि घी की वह मटकी जो टोकनी से ढकी है उसे मेरी थाली में उलट दो। मैं आँख मूँद लेता हूँ, ताकि मेरे मन को संतोष हो जाए कि दाल में घी पड़ा है। गोंडिन ने वैसा ही किया पर वह क्या जानती

थी कि गोंड उससे भी अधिक चतुर निकलेगा, उसने देखा घी एकदम से उसकी थाली पर गिरा। अपनी असफलता पर उसे अत्यधिक खीझ आयी, पर वह विवश थी और दूसरी ओर इस खीझ तथा हार का आनंद गोंड ने लिया।

अब गोंडिन ने देखा कि इस गोंड से चतुराई में पार आना कठिन है तो उसने कहा कि - “हे संबंधी, हमारे यहाँ एक परंपरा है कि जब भी कोई संबंधी आता है हम उसके साथ एक ही थाली में भोजन करते हैं। गोंड ने प्रसन्नता से स्वीकृति दे दी। दोनों खाने बैठे। गोंडिन ने देखा सब घी गोंड की तरफ की दाल में है, तो वह बोलती है, “एक पड़ोसी की कहानी तो सुनो-दो भाई थे, दोनों में आपसी झगड़े और मत-भेद थे। अतः पंचों की राय से उनकी संपत्ति का बँटवारा हो गया और घर के आँगन के बीचोंबीच उन्होंने दीवाल खड़ी कर ली। ऐसा कहते हुए प्रत्यक्ष में दाल के बीच भात की दीवाल खड़ी कर दी ताकि सब घी उधर न जाए।”

पर गोंड की भी तात्कालिक बुद्धि कम न थी, उसने कहा दीवाल उठाने से तो उनकी गुज़र न होती होगी, आखिर दोनों भाई थे, तो उन लोगों ने उस दीवाल के बीच में एक दरवाजा बनाया होगा। ऐसा कह कर उसने परोसे हुए भात (चावल) की भीत को फोड़ दिया ताकि घी उसकी तरफ आ जाए।

तो हर तरह की कोशिशों के बावजूद भी गोंडिन जीत न सकी, अतः उसने इसी गोंड़ से विवाह करने का निश्चय किया और अपना अभिप्राय सुना दिया। गोंड़ भी प्रसन्न हुआ। दोनों ने एक दूसरे को एक-एक कौर खिलाया और दूसरे दिन उनका विवाह सम्पन्न हुआ।

शब्दार्थ:

प्रस्ताव- विचारार्थ रखी हुई बात, सब्र-धैर्य, सहनशीलता; मेहमान-अतिथि, उम्मीद-विश्वास, स्वभाविक-सहज, आभास-महसूस, अनुभूति; प्रतीकात्मक-संकेतात्मक, खीझ-गुस्सा, ताका-झाँकी-ध्यान से देखना, टोकनी-छोटा टोकरा, टोकरा-बड़ी टोकरी बिना ढक्कन की, विवश-लाचार, निस्सहाय; अतः-इसलिए, भीत-दीवार, दीवाल।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

१. गोंड जाति किसके लिए प्रसिद्ध है?
२. गोंडिन का कैसा स्वभाव था?
३. गोंडिन की विवाह-परीक्षा का मुद्दा कौन-सा था ?
४. गोंडिन बाहर क्यों निकल गई?
५. गोंडिन के घर लौटने पर गोंड ने क्या नाटक रचा?
६. क्या गोंडिन के घर में सचमुच साँप थे?
७. गोंड और गोंडिन की होड़ में कौन हारा? कौन जीता?

II. चार-पांच वाक्यों में उत्तर लिखिए:

१. गोंडिन विवाह के पहले वर की परीक्षा क्यों लेना चाहती थी?
२. वर परीक्षा कैसे होती थी?
३. गोंड ने गोंडिन के बाहर जाने पर क्या किया?
४. गोंड की चतुराई देखकर गोंडिन ने कैसी चाल चली?
५. जीवन-निर्वाह के लिए स्त्री-पुरुष में कौन-कौन से गुणों की आवश्यकता है?

III. रिक्त स्थान भरिए:

१. छत्तीसगढ़ की गोंड जाति बहुत _____ मानी जाती है।
२. गोंडिन _____ रहती थी।
३. उसकी परीक्षा में अनेक गोंड _____ हो चुके थे।
४. उसके विस्मय का _____ न रहा।
५. गोंडिन को आभास हुआ कि शायद वह _____ है।
६. दूसरे दिन उन दोनों का _____ संपन्न हुआ।

IV. अन्य लिंग रूप लिखिए:

‘गोंड-गोंडिन’-यहाँ ‘इन’ प्रत्यय को जोड़कर पुल्लिंग शब्द को स्त्रीलिंग रूप में बदला गया है। इसी प्रकार के अन्य पाँच पुल्लिंग शब्द उनके स्त्रीलिंग रूप के साथ लिखिए:

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
उदा:	गोंड गोंडिन

- १.
- २.
- ३.
- ४.
- ५.

V. ऐसे कोई पाँच संदर्भ लिखिए, जब बहुत सब्र या धैर्य रखना पड़ता है:

जैसे: परीक्षा परिणाम निकलने के दिन सब्र रखना है।

- १.
- २.
- ३.
- ४.
- ५.

VI. सबके घरों में कोई न कोई मेहमान आते रहते हैं। आपके घर में जब मेहमान आते हैं तब आप और आपके परिवारवाले उनका सत्कार कैसे करते हैं? कोई चार विधाएँ लिखिए:

जैसे: उनको हाथ-पैर धोने के लिए पानी देते हैं।

- १.
- २.

३.

४.

VII. यहाँ प्रतीकात्मक दो लोकोक्तियाँ हैं। इनकी पुष्टी में दो छोटी-छोटी घटनाएँ लिखिए:

१. कुत्ते की पूँछ टेढ़ी।

२. अधजल गगरी छलकत जाय।

VIII. गद्यांश में विराम चिह्नों को पहचानकर उनकी विधा बताइए:

गोंडिन ने कहा - “तुम मेरे मेहमान (अतिथि) हो, तुम्हारा आतिथ्य करना मेरा धर्म है। पर मैं तो गरीब हूँ, मेरे पास कुछ अन्न नहीं। मैं गाँव में किसीके यहाँ से चावल-दाल, आटा माँगकर लाती हूँ ताकि तुम्हें भोजन दे सकूँ।”

योग्यता विस्तार:

- ‘दृढ़ निश्चय के सामने सभी कठिनाइयाँ भाग जाती हैं’ इस बात की पुष्टी के लिए मित्रों से चर्चा कीजिए तथा जीवन के प्रमुख विषयों में दृढ़ निश्चय लेने का निर्णय लीजिए।
- कभी-कभी जीवन में हारनेवाला जीत जाता है- इसके बारे में विचार कीजिए।



आशयः यात्रा करने से मनोरंजन होता ही है, साथ में मनोविकास भी। पुस्तकीय ज्ञान हमें जानकारी देता है, लेकिन किसी किले, मंदिर-मसजिद अथवा बाग-बगीचों को खुद देखने से वह दृश्य हमारे दिल में बस जाता है। कर्नाटक का एक ऐतिहासिक नगर है-बीदर। इस लेख में बीदर जिले के कई ऐतिहासिक स्थलों की झाँकी प्रस्तुत की गई है जो पाठक के मन को आह्लाद पहुँचाती है, साथ में उसका विकास भी कराती है।

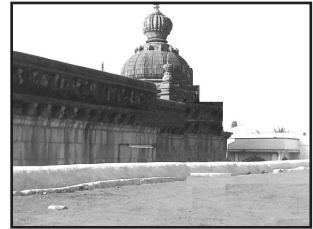
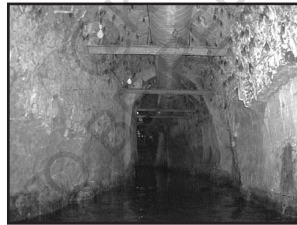
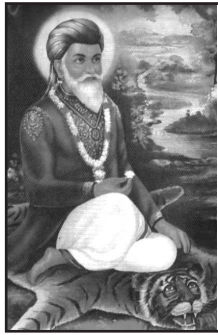
‘देश नोडबेकु, कोश ओदबेकु’- देश देखना चाहिए, शब्दकोश पढ़ना चाहिए। कन्नड की यह कहावत ज्ञान की कुंजी है। देश के कई प्रदेशों में घूम-घूमकर आनंद लेना है। शब्द-कोश पढ़ कर अपने ज्ञान की वृद्धि करनी है। सममुच देश का भ्रमण करना कई दृष्टियों से लाभदायक है।

देशाटन करने से हमें कई लाभ होते हैं। देश के भिन्न-भिन्न प्रांतों की भौगोलिक परिस्थिति, वहाँ के लोगों के आचार-विचार, वेष-भूषा, भाषा-संस्कृति का परिचय प्राप्त होता है। हम वहाँ के प्रमुख स्थलों की गरिमा, मंदिर-मसजिद की शिल्प तथा वास्तु-कला का सौंदर्य जान सकते हैं। पुस्तकीय ज्ञान अधूरा होता है जब कि यात्रा हमारे मन में अमिट छाप छोड़ जाती है। इतना ही नहीं, यात्रा के दौरान हमें कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। यात्रा के अनुभव हमें सुदृढ़, साहसी और सहिष्णु बनाते हैं।

कर्नाटक राज्य का बीदर जिला इतिहास प्रसिद्ध प्रदेश है। इस जिले के किले, मंदिर-मसजिद ऐतिहासिक गरिमा से संपन्न हैं।

बीदर जिले के पूरब में आंध्रप्रदेश है तो पश्चिम में महाराष्ट्र है। यह जिला दो राज्यों के बीच में स्थित है। अतः यहाँ के निवासियों के रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा भाषा-संस्कृति पर इन दो प्रदेशों का प्रभाव देखा जा सकता है। यह प्रदेश बहमनी बादशाहों के अधीन में रहने के कारण यहाँ के लोगों पर मुसलमान-संस्कृति की छाप भी पाई जाती है।

यहाँ का किला मजबूत और सुंदर है। इस किले की विशेषता उल्लेखनीय है। इस किले में रंगीनमहल, चिनी महल, तरकश महल तथा गगन महल हैं। ये राजमहल बहुत ही विशाल, हवादार तथा खूबसूरत हैं। इन महलों की दीवारों, छतों की सुंदरता देखने लायक है। वैसे तो यह किला आठवीं सदी में बना था। परंतु बीदर के सुलतान अहमद शाह बहमनी ने ई. १४२६-१४३२ के बीच इस किले की मरम्मत करा कर, नये महलों को बना कर इस किले में चार-चाँद लगाये थे।



यहाँ की 'सोलह खंभा मसजिद' की शोभा निराली है। यह निर्माण हमें रोम के सुंदर भवनों की याद दिलाता है। यहाँ की 'जामा मसजिद' भी दर्शनीय है। यह बहुत बड़ी है। इसका प्रार्थनास्थल बहुत बड़ा है। इसका गुंबज भी बड़ा है। यह मसजिद हमें स्पेइन देश के काईनोवा की मसजिद का स्मरण कराती है।

बीदर का 'गवान मदरसा' तिमंजिला भवन है। इसके मीनार ऊँचे तथा सुंदर हैं। यहाँ इस्लाम धर्म और संस्कृति की शिक्षा दी जाती थी। आज भी यह एक मशहूर शिक्षा-केंद्र रहा है।

बीदर के शिवनगर में पापनाश ईश्वर का मंदिर है। स्थल-पुराण के अनुसार भगवान श्रीराम ने यहाँ शिवलिंग की स्थापना की थी। यहाँ का शिवलिंग देखने दूर-दूर से भक्त नित्य आते रहते हैं।

‘नरसिंह झरना’ बीदर के दर्शनीय स्थानों में प्रमुख है। यहाँ ढाई फर्लांग लंबा सुरंग है जिसके अंदर सदा छाती तक पानी लबालब भरा रहता है। सुरंग के अंत में भगवान नरसिंह की मनोहर मूर्ति है। इस गुहालय की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई है।

‘गुरुनानक झीरा’ बीदर का एक विशिष्ट स्थान है। कहा जाता है कि सिक्ख धर्म के आदिगुरु गुरुनानक तीर्थ यात्रा करते-करते यहाँ पधारे थे। उन्होंने शिष्यों की प्यास बुझाने के लिए अपनी लाठी से एक टीले को छू लिया। तब वहाँ से पानी का झरना फूट पड़ा। इस झरने का पानी बहुत ही निर्मल और स्वादिष्ट होता है। यह सिक्खों का पवित्र एवं पूजनीय स्थान है।

बीदर जिले का ‘बसव कल्याण’ बहुत प्रख्यात है। यह एक पावन स्थल है। यहाँ बसवेश्वर का मंदिर है। सुप्रसिद्ध अनुभव मंटप यहीं पर है। इस ऐतिहासिक मंडप में अल्लमप्रभु, बसवण्णा, चेन्नबसवण्णा, अक्कमहादेवी आदि शरण और शरणी धार्मिक चर्चाएँ किया करते थे।

बीदर जिले का एक और ऐतिहासिक एवं धार्मिक क्षेत्र है - माणिक नगर। यह हुमनाबाद से दो किलोमीटर की दूरी पर है। यहाँ ‘सकल मताचार्य’ माणिक प्रभु जी का मंदिर है। ये संत महात्मा अठारहवीं सदी के प्रसिद्ध साधु थे। जात-पाँत का भेद-भाव न माननेवाले माणिक प्रभु जी एक सिद्ध पुरुष थे। देश के कोने-कोने से हजारों भक्त आकर माणिक प्रभु जी के मंदिर में प्रभु की मूर्ति के चरण-कमलों में फूल चढ़ाते हैं।

कर्नाटक का बीदर कई ऐतिहासिक, पौराणिक एवं धार्मिक स्थलों का निलय है। इस प्रदेश के दर्शनीय स्थलों की यात्रा करना एक मधुर और अविस्मरणीय अनुभव है। तो बच्चो, आप इस जिले की यात्रा पर क्यों

नहीं निकल पड़ते? हाँ, एक शेर जरूर याद रखना, “सैर कर दुनिया की गाफिल, जिंदगानी फिर कहाँ ? जिंदगी गर रही है तो नौजवानी फिर कहाँ?” (हे सोनेवालो! यह जीवन छोटा है। इसलिए सैर-सपाटे पर निकल कर देश का भ्रमण करो। तुम्हें यह जीवन मिला है और नौजवानी का पूरा फ़ायदा उठाओ।)

शब्दार्थ:

शब्दकोश - Dictionary, डिक्शनरी; भ्रमण - यात्रा, गरिमा-बढ़प्पन, महानता; अमिट-न मिटनेवाला, शाश्वत; सुदृढ़ - ताकतवर, मजबूत; सहिष्णु - कष्ट सहनेवाला, मदरसा -पाठशाला, स्थल-पुराण—किसी प्रदेश के बारे में लिखी - कही गई कहानियाँ, मनोहर -सुंदर, प्रख्यात -मशहूर, शरण-शरणी -शिव के भक्त, अविस्मरणीय -कभी भी न भूलनेवाला, शेर-उर्दू की दो पंक्तियोंवाला पद्य, गाफिल -बेसुध, अनजाना

अभ्यास

मौखिक प्रश्न:

१. ‘देश नोडबेकु, कोश ओदबेकु’ - इस कन्नड कहावत का क्या अर्थ है?
२. क्या पुस्तकों का ज्ञान पूरा होता है?
३. यात्रा हमें कौन-सा अनुभव देती है?
४. बीदर किन-किन राज्यों की सरहद पर स्थित है ?
५. बीदर किले के भीतर कौन-कौन-से महल हैं?

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

१. सोलह खंभा मसज़िद किसकी याद दिलाती है?
२. गवान मदरसे में कितनी मंजिलें हैं?
३. शिवनगर में शिवलिंग की स्थापना किसने की थी?
४. नरसिंह झरने का सुरंग कितना लंबा है?

५. गुरुनानक झीरे का पानी कैसा है?
६. अनुभव मंटप की क्या विशेषता है?
७. माणिक प्रभु जी किस नाम से मशहूर हैं?

II. इन प्रश्नों का उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए :

१. देशाटन करने के क्या-क्या प्रयोजन हैं?
२. बीदर किले का वर्णन कीजिए ।
३. सोलह खंभा मसजिद की क्या विशेषता है?
४. नरसिंह झरने का परिचय दीजिए ।
५. नानक झीरा के बारे में लिखिए ।
६. बसव कल्याण किस कारण से प्रख्यात हैं ?
७. आप माणिक नगर के बारे में क्या जानते हैं?

III. इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

अमिट प्रभाव छोड़ना, लबालब भर जाना,
चार-चाँद लगाना ।

IV. सही शब्दों को जोड़िए :

अ

आ

- | | |
|-------------------|-------------------|
| १. पुस्तकीय ज्ञान | अ) तिमंजिला भवन |
| २. गवान मदरसा आ) | चर्चा का केंद्र |
| ३. अनुभव मंटप | इ) सकल मताचार्य |
| ४. माणिक प्रभु जी | ई) अधूरा होता है। |

V. इन शब्दों के विरुद्धार्थक रूप लिखिए:

- | | |
|-------------|-----------|
| १. लाभ | २. प्रमुख |
| ३. सुंदर | ४. बनाना |
| ५. ऊँचे | ६. शिक्षा |
| ७. प्रख्यात | ८. दूर |
| ९. लंबा | |

VI. अन्य वचन शब्द लिखिए:

- | | |
|-------------|--------------|
| १. शिल्प - | ६. यात्रा - |
| २. लाभ - | ७. भाषा - |
| ३. ज्ञान - | ८. विशेषता - |
| ४. अनुभव - | ९. चर्चा - |
| ५. प्रदेश - | |

VII. ऐतिहासिक गरिमा से संपन्न चित्रदुर्गा किले के बारे में एक छोटा-सा निबंध लिखिए।

योग्यता विस्तार :

- कर्नाटक के किसी एक जिले के संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए।

भाषा - बोध

समास

‘समास’ वह शब्द-रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से आपस में स्वतंत्र संबंध रखनेवाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं। समास रचना में दो शब्द (पद) होते हैं। पहला पद पूर्वपद कहलाता है और दूसरा पद उत्तर पद कहलाता है। इन दोनों के मेल से बना शब्द समास-पद कहलाता है। जैसे -

राजा का कुमार = राजकुमार

राम और लक्ष्मण = राम-लक्ष्मण

समास - विग्रह : जब समास-पद के सभी पद अलग-अलग किए जाते हैं तब उस प्रक्रिया को समास - विग्रह कहते हैं। जैसे ‘सियाराम’ समास-पद है। इसका विग्रह होगा ‘सिया और राम।’

समास के भेद:

समास के निम्नलिखित छः प्रमुख भेद हैं-

१. तत्पुरुष समास
२. कर्मधारय समास
३. द्वंद्व समास
४. द्विगु समास
५. बहुव्रीहि समास
६. अव्ययीभाव समास

१. **तत्पुरुष समास**: जहाँ पूर्वपद गौण हो और उत्तरपद प्रधान हो, वहाँ तत्पुरुष समास होता है।

सामान्यतः तत्पुरुष समास दो प्रकार से बनते हैं ।

(अ) संज्ञा + संज्ञा के मेल से,

जैसे - युद्ध की भूमि - युद्ध भूमि

दान में वीर - दानवीर

(आ) संज्ञा + क्रिया मूलक शब्दों के मेल से,

जैसे - शरण में आगत - शरणागत

आप पर बीती - आपबीती

२. **कर्मधारय समास** : जहाँ पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है वहाँ कर्मधारय समास होता है।

जैसे - नीलकमल- नीला कमल, पीताम्बर - पीला अम्बर

३. **द्वंद्व समास** : जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

जैसे - गंगा-जमुना : गंगा और जमुना

शिव-पार्वती : शिव और पार्वती

राधा-कृष्ण : राधा और कृष्ण

४. **द्विगु समास** : इसमें पूर्वपद संख्यावाची होता है।

जैसे - त्रिभुवन - तीन भुवन
चौराहा - चार राह,
नवरत्न - नौ रत्न

५. **बहुव्रीहि समास** : जहाँ समस्त पद में आए दोनों पद गौण होकर, किसी तीसरे पद का बोध कराया जाता है वहाँ बहुव्रीहि समास होता है।

जैसे - दशकंठ - जिसके दस कंठ हैं (रावण)
त्रिलोचन - जिसके तीन लोचन हैं (शंकर)
गिरिधर - गिरि को धारण करनेवाला (कृष्ण)

६. **अव्ययीभाव समास** : जिस समास में पूर्व पद अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

जैसे - प्रति दिन - प्रति + दिन, यथाशक्ति - यथा + शक्ति
भरपेट - भर + पेट

योग्यता विस्तार:

- कर्नाटक के अन्य जिलों की यात्रा करने की योजना बनाइए ।
- कर्नाटक के कुछ ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी प्राप्त कीजिए ।
- मृगालय तथा अभयारण्यों की सैर करके अपने अनुभव लिखिए।

दादू के दोहे



-दादूदयाल

आशय : संत दादूदयाल की कविताओं में भगवान के प्रति अपार प्रेम है। गुरु की महत्ता, भगवान के प्रति भक्ति, संत-साधुओं के प्रति आदर की भावना तथा प्रेम को आवश्यक मान कर इनका आचरण करने का संदेश देते हैं।

- १) दादू सतगुरु सूं सहजै मिल्या, लिया कंठि लगाइ ।
दाया भई दयाल की, तब दीपक दिया जगाइ ॥१॥
- २) साहिब का दर छांडि करि, सेवग कहीं न जाइ ।
दादू बैठा मूल गहि, डालौ फिरै बलाइ ॥२॥
- ३) पर उपगारि सन्त सब, आये इहि कलि माहि ।
पीवै पिलावै रामरस, आप सवारथ नाहिं ॥३॥
- ४) दादू इस संसार में, ये द्वै रतन अमोल ।
इक साँई अरु संतजन, इनका मोल न तोल ॥४॥
- ५) दादू पाती प्रेम की, बिरला बाँचै कोइ ।
वेद पुरान पुस्तक पढ़ै, प्रेम बिना क्या होइ ॥५॥

कवि परिचय :

संत कवि दादूदयाल का जन्म मध्य प्रदेश में सन् १५१४ में हुआ। इनकी बानी कबीरदास की बानी के जोड़ की कही जाती है। ये निर्गुण भक्ति के महान कवि थे। इनका प्रेमतत्त्व बहुत ऊँचा और गहरा है। इनके सबदों और साखियों पर कबीर का प्रभाव देखा जाता है। इन्होंने प्रेम के नवनीत और दया के समभाव को दोनों हाथों लूटा है। इनकी भाषा बड़ी रोचक और जानदार है। दादूदयाल का निधन राजस्थान में सन् १६०३ में हुआ।

शब्दार्थः

- १) सहजै - आसानी से, मिल्या-मिला, सूं-से, दाया-दया, भई-हुई, कंठि-गले से
- २) साहिब - मालिक, भगवान; दर-दरवाजा, छांडिकरि-छोड़कर, सेवग-सेवक, भक्त; गहि-पकड़ना
- ३) पर उपगारि - दूसरों की मदद करनेवाले, इहि-इसी, कलि- कलियुग, माहि-में, पीवै-पीते हैं, पिलावै-पिलाते हैं, रामरस-राम नाम का रस, सवारथ-स्वार्थ
- ४) द्वै - दो, अमोल-कीमती, इक-एक, साँई-भगवान, अरू-और, मोल-कीमत, तोल-तौलना
- ५) पाती - पत्र, चिट्ठी; बिरला-विशिष्ट, अपूर्व ; बाँचै-पढ़ता है

भावार्थः

- १) दादूदयाल जी प्रस्तुत दोहे में कहते हैं कि वे अपने सद्गुरु से सहज, सरल रूप से मिले। मिलते ही उन्होंने गले लगाया। दादू पर जैसे ही सतगुरु की दया हुई वैसे ही ज्ञान का दीपक जल उठा। सतगुरु के आशीर्वाद से ज्ञान प्राप्त हुआ।
- २) दादूदयाल जी प्रस्तुत दोहे में कहते हैं कि उस भगवान या मालिक का दर, स्थान छोड़कर यह सेवक और कहीं नहीं जाएगा। दादू मूल स्थान, सही स्थान में बैठा है। उसने अपनी सारी पीड़ा, कष्ट-बलाओं को बाहर निकालकर फेंक दिया है।

- ३) दादूदयाल जी के अनुसार संत जन दूसरों की सहायता और सेवा करने के लिए ही इस कलियुग में आए हैं। साधु संतों का मुख्य काम है — राम-नाम का रस पीना और सभी को पिलाना। इसमें किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं है।
- ४) दादू प्रस्तुत दोहे में कहते हैं कि इस संसार में दो रत्न अनमोल और कीमती हैं जिनका मूल्य नहीं लगा सकते। एक स्वयं भगवान और दूसरा साधु-संत। इन दोनों की कीमत नहीं लगा सकते और इन्हें तोल भी नहीं सकते।
- ५) दादूदयाल जी प्रस्तुत दोहे में कहते हैं-प्रेम का पत्र पढ़नेवाला कोई विशिष्ट ही होगा, विरला ही होगा। प्रेम का पाठ पढ़ना सभी के वश में नहीं है। वेद पढ़ें, पुराण पढ़ें, सभी बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ें, यदि प्रेम रूपी ग्रंथ या चिट्ठी नहीं पढ़ेंगे तो वेद, शास्त्र, पुराण पढ़ना बेकार है। प्रेम ही सब कुछ है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए:

१. सत्गुरु से मिलते ही दादू क्या करते हैं?
२. दादू सदा कहाँ रहना चाहते हैं?
३. संत लोगों का स्वभाव कैसा होता है?
४. इस संसार में दो कीमती रत्न कौन-से हैं?
५. प्रेम की पाती कौन पढ़ेगा?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए:

१. दादू के अनुसार सत्गुरु का क्या महत्व है?
२. इस कलियुग में संतों का जन्म क्यों हुआ है?
३. प्रेम के बारे में दादू क्या कहते हैं?

III. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

१. साहिब का _____ कहीं न जाइ।
२. दादू इस संसार में, _____।
३. इक साँई _____ तोल।
४. दादू पाती _____ कोइ।
५. वेद पुरान _____ क्या होइ॥

IV. भाव स्पष्ट कीजिए :

१. पीवै पिलावै रामरस, आप सवारथ नाहि ॥
२. वेद पुरान पुस्तक पढ़ै, प्रेम बिना क्या होइ॥

V. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

दीपक, दर, सेवग, सवारथ, संसार, अमोल, पाती ।

VI. सही शब्द जोड़कर लिखिए :

‘अ’

‘ब’

- | | |
|------------------|-------------------|
| १. सत्गुरु | क) पर उपगारि |
| २. साहिब | ख) साँई अरू संतजन |
| ३. संत | ग) बिरला बाँचै |
| ४. अमोल रतन | घ) सेवग |
| ५. पाती प्रेम की | ङ) लिया कंठि लगाइ |

भाषा - बोध

शब्द-युग्मः

बातें करते समय अथवा लिखते समय कुछ शब्द साथ-साथ प्रयुक्त होने वाले शब्दों के जोड़े को शब्द-युग्म कहा जाता है। जैसे-राधा-कृष्ण, हुब्ली-धारवाड, हैदराबाद-सिकंदराबाद । शब्द-युग्म अथवा शब्दों के जोड़े का अपना महत्व भी है और अपनी अलग पहचान भी।

निकटता का संबंधः

कुछ शब्द-युग्मों का प्रयोग परस्पर निकट संबंध को प्रकट करते हैं। जैसे- 'राम-लक्ष्मण'। राम और लक्ष्मण भाई-भाई हैं। वे एक दूसरे से बिछुड़ कर नहीं रह सकते। यह उन दोनों की निकटता का बोध कराता है।

दूरी का बोधः

कुछ शब्द-युग्म लंबी दूरी को प्रकट करते हैं। जैसे- जमीन-आसमान। वैसे तो जमीन और आसमान एक दूसरे से बहुत दूर हैं। दोनों का मेल-मिलाप कभी भी नहीं हो सकता। फिर भी यह शब्द-युग्म साथ-साथ चलता है।

विरुद्ध अर्थ पर बलः

कुछ शब्दों के जोड़े प्रयोग में एक साथ होने पर भी एक दूसरे से विरोध को प्रकट करते हैं। जैसे- पाप-पुण्य, राग-द्वेष तथा गोरा-काला ।

समान अर्थ पर बल :

कुछ शब्द-युग्म स्वरूप और स्वभाव में एक जैसे रहते हैं। वाक्यों में इनका प्रयोग जब-तब होता रहता है। एक ही अर्थ प्रकट करनेवाले इस शब्द-युग्म के प्रयोग से कथन-पद्धति में तीव्रता आ जाती है।

जैसे : कभी-कभी, बात-बात, पत्ता-पत्ता, शब्द-युग्म के प्रयोग से वाक्य रचना में सुंदरता बढ़ती है और अर्थ में वृद्धि भी होती है

योग्यता विस्तार :

- कबीर, तुलसी, रहीम, वृंद के दोहों का संकलन कीजिए ।
- नैतिक शिक्षा की अवधि में दोहों के महत्व की चर्चा कीजिए ।

पाठ - १७

दो थैलियाँ



-डॉ गिरिराज शरण अग्रवाल

आशय : केवल काम करना काफी नहीं है । कोई भी काम करने से पहले सोच विचार करके तन-मन लगाकर काम में जुट जाना चाहिए । विवेक से काम करने पर ही कोई सुखी या विजयी हो सकता है ।

पात्र - परिचय

गिरधारी	:	मोहित का पिता
मोहित	:	गिरधारी का बड़ा पुत्र
रोहित	:	गिरधारी का छोटा पुत्र
कांता	:	मोहित, रोहित की माँ
सुधा	:	मोहित, रोहित की बहिन

दृश्य : एक

(मंच पर बूढ़ा किसान गिरधारी खाट पर बैठा दिखाई देता है । भोर का समय है । वह अपने दोनों बेटों को आवाज़ देता है ।)

गिरधारी : अरे, ओ मोहित !

मोहित : हाँ ! पिताजी !

गिरधारी : क्या कर रहे हो तुम ? अपने छोटे भाई रोहित को लेकर मेरे पास आओ। अपनी माँ से कहो, वह मेरे लिए नाश्ता तैयार कर दे। (दोनों लड़के रोहित और मोहित अपने पिता गिरधारी के पास खड़े दिखाई देते हैं।)

मोहित : कहिए पिताजी! क्या आदेश है ?

गिरधारी : बेटे ! तुम जानते हो, मेरा पूरा जीवन खेतों में काम करते बीता है। पचास साल से अधिक हो गए कड़ी मेहनत करते हुए । मैं बहुत थक गया हूँ।

रोहित : हम तो आपसे बार-बार कहते हैं पिताजी, अब आराम करें। खेत-किसानी का काम हम खुद सँभाल लेंगे, पर आप मानते ही नहीं हैं।

गिरधारी : मानूँ कैसे ? एक तो काम करने की आदत है, फिर मुझे तुम दोनों पर इतना विश्वास नहीं है कि तुम खेत-किसानी का पूरा काम सँभाल सकते हो ।

मोहित : आप विश्वास तो करके देखें, पिताजी। हम दोनों आपकी संगत में खूब जान गए हैं खेती के काम को ।

गिरधारी : केवल काम जानना ही काफी नहीं है ।

रोहित : किसान को अपने विवेक का प्रयोग भी करना पड़ता है कई बार। यही ना ।

मोहित : जब तक आप हम लोगों को मौका नहीं देंगे, हम अपने विवेक का प्रयोग कैसे कर पायेंगे?

गिरधारी : ठीक है मोहित ! तुम ठीक कहते हो । जब तक आदमी को मौका नहीं मिलता, वह अपना विवेक दिखा ही नहीं पाता ।

मोहित : पिताजी आप यही सोचते हैं ना कि हम अकेले ठीक ढंग से काम नहीं कर पाएँगे ?

गिरधारी : नहीं ! मेरे बच्चो, ऐसा नहीं है । अब मैं कुछ समय के लिए तुम

दोनों पर ही काम छोड़कर कहीं घूम आना चाहता हूँ ।

कांता : (गिरधारी के निकट आते हुए) जी, भोजन तैयार कर दिया है ।
पर मेरा मन नहीं मानता है, बुढ़ापे में आपको कहीं जाने देने को।

गिरधारी : कांता, मैं तो जीवन-भर तेरे पाँव से पाँव बाँधे बैठा रहा । खेत
और घर के अलावा दुनिया में कुछ देखा ही नहीं, अब चार-छः
महीने के लिए घूम आने दे मुझे ।

कांता : जाओगे कहाँ ?

गिरधारी : यह देश बहुत बड़ा है । बहुत विशाल । क्या नहीं है यहाँ ? पर्वत
हैं, सागर हैं, अनेक रमणीय स्थान हैं । घूम-घूम कर जगह-जगह
इस माटी की महक सूँघूँगा ।

मोहित : कितने दिन में लौटेंगे, पिताजी ?

गिरधारी : बस कोई चार महीने बाद ! अब हमने साढ़ी की फसल उठाई है
ना, अगले महीने धान बोए जाएँगे । जब तुम लोग धान की फसल
काट रहे होंगे, तब मैं लौट आऊँगा ।

कांता : मैंने कपड़े और ज़रूरत का दूसरा सामान तैयार कर दिया है जी।

गिरधारी : (खिड़की की ओर देखते हुए) सुधा! मैंने तुझे दो थैलियाँ दी थीं।
जा, उन्हें उठा ला।

(सुधा कपड़े की दो थैलियाँ उठाकर लाती है। इनमें कोई चीज़ भरी हुई है।

सुधा : लीजिए पिताजी।

गिरधारी : (दोनों थैलियों को संभालते हुए) ठीक है, आ बैठ जा, बैठ जा
बेटी मेरे पास!

(सुधा खाट पर बैठ जाती है।)

सुधा : पिताजी, आप कहीं जा रहे हैं ना? मेरे लिए क्या लेकर आएंगे परदेश से?

गिरधारी : (प्यार से) तेरे लिए बहुत अच्छी-अच्छी ढेर सारी चीजें लेकर आऊंगा। तू घर के कामों में अपनी माँ का हाथ बाँटना, समझी?

सुधा : हाँ पिताजी !

गिरधारी : (दोनों बेटों को संबोधित करते हुए) लो मोहित, एक थैली तुम रखो और दूसरी रोहित को दे दो।

(दोनों लड़के एक-एक थैली ले लेते हैं)



मोहित : इनका क्या करना है पिताजी?

गिरधारी : इनमें आधा-आधा किलो धान है। बहुत बढ़िया किस्म का। कुछ दिन पहले मँगवाया था मैंने।

रोहित : पर पिताजी! हम इसका क्या करें?

गिरधारी : तुम लोग इसे सावधानी से अपने पास रखना। खराब न होने देना इसे।
लौट कर देखूँगा, तुमने इस धान को किस तरह सुरक्षित रखा है?

मोहित : ठीक है पिताजी!

(गिरधारी उठता है और अपना सामान लेकर घर से बाहर निकल जाता है। कांता, दोनों बेटे और लड़की उसे दरवाज़े तक छोड़ने आते हैं।)

दृश्य : दो

(स्थान पूर्ववत्)

रोहित : भैया मोहित! समझ में नहीं आया, पिताजी ने धान की ये थैलियाँ हमें किसलिए दी हैं ?

मोहित : साथ ही यह निर्देश भी दिया है कि इन्हें खराब न होने देना। सुरक्षित रखना इन्हें।

रोहित : थैलियों में केवल आधा-आधा किलो धान है। यह तो किसी भी काम में नहीं आ सकता है।

मोहित : हमें काम में लाने की आवश्यकता ही क्या है भैया? हमें आदेश मिला है कि थैलियों को सँभालकर रखना। पिताजी के आने पर इन थैलियों को लौटा देंगे।

रोहित : पर यह तो कोई समझदारी की बात नहीं लगती मुझे!

मोहित : क्यों नहीं लगती?

रोहित : चार महीने तक हम आधा-आधा किलो धान रखें, इसमें तो पिताजी का हित क्या है और हमारा हित क्या है?

मोहित : तुम बेकार चक्कर में पड़ रहे हो? जैसा पिताजी ने कहा है, वैसा करो। धान इधर-उधर हो गया तो बहुत नाराज़ होंगे पिताजी लौटकर।

- सुधा** : (भाइयों के पास आते हुए) अजी नहीं, नाराज़ क्यों होंगे? उन्हें तो याद भी नहीं रहेगा कि उन्होंने जाते हुए आधा-किलो धान दिया था।
- मोहित** : हाँ, तुम ठीक कहती हो। यह इतना कम है कि पिताजी को याद ही नहीं रहेगा कि वह जाते हुए क्या दे गए थे हमें?
- सुधा** : तो फिर? अगले हफ्ते विवाह करूंगी मैं अपनी गुड़िया का, इनका भात बना लेंगे?
- मोहित** : कैसे?
- सुधा** : कैसे क्या? यह दोनों थैलियाँ तुम मुझे दो, मैं कूट छान कर इनका चावल निकाल लेती हूँ। पिताजी कहते थे कि यह बहुत बढ़िया किस्म का धान है। खाने में बहुत मज़ा आएगा।
- मोहित** : ऐसा बढ़िया चावल हमने इससे पहले नहीं खाया होगा, सुधा!
- सुधा** : हाँ, भैया। लगता तो ऐसा ही है। पिताजी कहते थे बहुत दूर से मँगाया है, उन्होंने इस धान को।
- कांता** : (बच्चों की ओर आते हुए) सुन रही हूँ मैं भी तुम लोगों की बातें! ऐसी मूर्खता का काम मत करना बच्चो!
- सुधा** : मूर्खता की क्या बात है इसमें?
- कांता** : जब तुम्हारे पिताजी ने उन थैलियों को सावधानी से रखने को कहा है, तो तुम्हें उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।
- मोहित** : पर माँ, कोई तुक भी है। आधा किलो धान क्या भाड़ फोड़ेंगे? न खाने के न बोलने के। पिताजी तो कभी-कभी ऐसा काम बताते हैं जिसका कोई अर्थ ही नहीं होता।
- कांता** : फिर भी मेरी सलाह यही है कि तुम इन थैलियों को सँभाल कर रखो।
(कांता वापस जाती है।)

दृश्य : तीन

(रोहित एक क्यारी में कुछ रोपता हुआ दिखाई देता है।)

मोहित : क्या कर रहे हो भैया?

रोहित : धान रोप रहा हूँ क्यारी में।

मोहित : कैसे बच्चोंवाले काम में लगे हो, भैया क्या प्राप्त होगा तुम्हें?

रोहित : तुम इसकी चिंता न करो। जो कर रहा हूँ करने दो मुझे ?

मोहित : पिताजी लौटकर बहुत नाराज़ होंगे तुमसे? अगर उन्हें थैली याद आ गई और वह माँग बैठे तो क्या करोगे?

रोहित : देखा जाएगा, तुम चिंता न करो इसकी।

(मोहित उसे क्यारी में काम करता छोड़ वापस चला जाता है।)

दृश्य : चार

कांता : अरे मोहित? तुम्हारे पिताजी की चिट्ठी आई है आज । वह शाम तक आ रहे हैं। कहीं जाना नहीं तुम लोग ।

मोहित : ठीक है माँ जी !

कांता : रोहित और सुधा कहाँ हैं ?

मोहित : वे भी यहीं हैं घर में !

कांता : उन्हें भी बता दे।

(मंच पर गिरधारी और उसके साथ परिवार के अन्य सदस्य दिखाई देते हैं।)

मोहित : यात्रा कैसी रही पिताजी ?

गिरधारी : बहुत अच्छा बेटे, कोई कष्ट नहीं हुआ यात्रा में ।

सुधा : आप मेरे लिए क्या लाए पिताजी ?

गिरधारी : बताता हूँ बेटी ज़रा रुको (फिर बेटों की ओर देखते हुए) मैं तुम लोगों को दो थैलियाँ दे गया था। वह कहाँ हैं, लाकर दो मुझे। रोहित और मोहित जाकर लौटते हुए दिखाई देते हैं। मोहित के हाथ में वही आधे किलो की थैली है जबकि रोहित के सिर पर बहुत बड़ा बोरा है।



गिरधारी : (आश्चर्य से) अरे रोहित! तुमने थैली को बोरे में कैसे बदल दिया?
रोहित : मैंने इन्हें बोया और यह एक बोरा बन गया। अगले वर्ष एक बोरे से पूरा खेत भर जाएगा।

गिरधारी : (बेटे की कमर थपकते हुए) शाबाश! इसी विवेक की आशा थी तुमसे। और मोहित तुम तो बिल्कुल बुद्धू निकले। देखो, अपने भाई से तो सीख लो।

लेखक परिचय:

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। इन्होंने साहित्य की कई विधाओं में अपनी कलम चलाई है। इन्होंने विशेषतया बच्चों के लिए कई नाटक लिखे हैं। इन नाटकों की विषयवस्तु सरल होते हुए भी बाल मनोवैज्ञानिक और नीतिप्रद है। यह एकांकी पाठशालाओं के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अभिनय योग्य है।

शब्दार्थ:

भोर-सबेरा, आदेश-आज्ञा, रमणीय-सुंदर, महक-सुगंध, खुशबू; साढ़ी की फसल-आषाढ़ में बोयी जानेवाली फसल, बढ़िया किस्म-अव्वल दर्जे का प्रकार, निर्देश-सूचना, तुक-विशेष अर्थ, बुद्धू-मूर्ख, बेवकूफ

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

१. गिरधारी क्यों घूमने निकला ?
२. गिरधारी ने अपने बेटों को क्या दिया ?
३. गिरधारी के जाने के बाद रोहित ने क्या सोचा ?
४. मोहित ने अपने पिताजी की बात पर क्या सोचा ?
५. रोहित ने धान का क्या किया ?
६. गिरधारी रोहित से क्यों खुश हुआ ?

II. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए:

१. गिरधारी ने यात्रा करने की बात क्यों सोची ?
२. रोहित और मोहित ने आपस में क्या-क्या बातें कीं ?
३. मोहित ने धान की थैली का उपयोग कैसे किया ?
४. रोहित ने पिताजी की बातों पर क्या सोचा ?
५. रोहित ने पिता की दी हुई थैली का क्या किया ?
६. गिरधारी यात्रा से लौटने के बाद किस बेटे से खुश हुआ और क्यों ?

III. विलोम शब्द लिखिए :

उदाहरण : अधिक X कम

- | | | |
|------------|-------------|----------|
| १. कष्ट | २. बुद्ध | ३. विवेक |
| ४. बुढ़ापा | ५. सुरक्षित | ६. परदेश |
| ७. बढ़िया | ८. सावधानी | ९. हित |

IV. उदाहरण के अनुसार पर्यायवाची शब्द लिखिए:

उदाहरण - जीवन - जिंदगी

- | | | |
|-----------|------------|-------------|
| १. दुनिया | २. रमणीय | ३. माटी |
| ४. महक | ५. ज़रूरत | ६. किस्म |
| ७. खराब | ८. निर्देश | ९. नाराज़ |
| १०. मेहनत | ११. सागर | १२. प्राप्त |

V. मुहावरे

१. पाँव से पाँव बाँधकर चलना = कदम से कदम मिलाकर चलना
२. हाथ बाँटना = मदद करना, सहायता करना

VI. कोई चार मुहावरे लिखकर उनका अर्थ लिखिए।

VII. उपयुक्त मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो ।

१. इस एकांकी को कहानी के रूप में लिखिए।

भाषा बोध

विस्मयादिबोधक अव्यय

वाक्य में विस्मय आदि विभिन्न भावों को प्रकट करनेवाला शब्द विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाता है।

जैसे: १. अहा! कितना सुंदर दृश्य है। (हर्ष सूचक)

२. हाय! यह क्या हो गया? (शोक सूचक)

विस्मय आदि भावों को सूचित करनेवाला चिह्न है-‘!‘

विस्मयादिबोधक के कुछ भेद:

१. विस्मय बोधक - अरे!, क्या!, ओह!, सच!, बापरे! आदि

२. शोक बोधक - हाय!, बापरे बाप!, हे राम!, आह! आदि

३. घृणा या तिरस्कारबोधक - छिः!, थू-थू!, धिक्कार! आदि

४. स्वीकृतिबोधक - अच्छा!, ठीक!, हाँ! आदि

५. हर्षबोधक - वाह-वाह!, धन्य, अहा!, शाबाश! आदि

६. संबोधनबोधक - हे!, अरे!, अजी!, ओ!, हो! आदि

विस्मयादिबोधक अव्यय का प्रयोग सदा वाक्य के आरंभ में होता है।

विस्मयादिबोधक के सभी भेदों से एक-एक शब्द लेकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार:

- एकांकी को अभिनय के साथ प्रस्तुत कीजिए।



पूरक वाचन जगदीशचंद्र बोस

भारत के महान वैज्ञानिकों में श्री जगदीशचंद्र बोस भी एक हैं। इन्होंने सदा विश्व की शुभकामना की।

जगदीशचंद्र बोस बंगाल के राठीखाल में पैदा हुए। उनका जन्म ३० नवंबर १८५८ में हुआ। जगदीशचंद्र बोस बचपन से होनहार तथा होशियार थे। प्रारंभिक शिक्षा के बाद कलकत्ता के सेंट जेवियर कॉलेज में इन्होंने बी.ए. परीक्षा पास की। उसके बाद विदेश जाकर केंब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करके भारत लौटकर आये। कलकत्ता प्रेसिडेन्सी कॉलेज में प्रवक्ता बने। उसी कॉलेज में कुछ अंग्रेजी लोग भी सह-प्रवक्ता बनकर काम करते थे। भारतीय प्रवक्ताओं को वेतन अंग्रेजी लोगों से बहुत कम मिलता था। यह बात बोस को अच्छी नहीं लगी। उन्होंने तीन साल बिना वेतन लिये छात्रों को अच्छी शिक्षा दी। अंत में उस विद्यालय के अधिकारी वर्ग हार गये। तीन वर्षों का पूरा वेतन उन्हें वापस दिया गया। उसके बाद सभी प्रवक्ताओं को समान वेतन देने लगे। उसी दिन से बोस के मन में भी देश को स्वतंत्र कराने का संकल्प दृढ़ होने लगा।

जगदीशचंद्र बोस को वनस्पति तथा प्रकृति-विज्ञान में अधिक रुचि थी। उनका विचार था कि जिस प्रकार मानव जीवन में सुख-दुःख होते हैं उसी प्रकार पेड़-पौधों के जीवन में भी सुख-दुःख होते हैं। अगर हम प्यार से पानी डालें तो पेड़-पौधे अधिक फल-फूल देते हैं, क्योंकि पेड़ पौधों में भी भावनाएँ होती हैं। बोस के इस विचार पर विदेशी लोग हँसने लगे। जब यह बात सत्य निकली तब संसार को बहुत आश्चर्य हुआ। स्वामी विवेकानंद ने भी बोस की प्रशंसा की।

बोस ने अपनी कमाई से एक निजी प्रयोगशाला की स्थापना की। वह संसार की प्रसिद्ध प्रयोगशाला बनी। बोस ने 'क्रेस्कोग्राफ' उपकरण का आविष्कार किया। बेतार संकेत भेजने में अपनी प्रतिभा दिखाई। अपने इस ज्ञान के कारण उन्होंने शिक्षा विभाग में श्रेष्ठ पद भी ग्रहण किया।

जगदीशचंद्र बोस ने संसार के कोने-कोने में भारत की ख्याति फैला दी। २३ नवंबर १९३७ में बोस का देहांत हो गया। भारतीय विज्ञान क्षेत्र में इनका सहयोग अमर है।

I. प्रश्नों का उत्तर लिखिए:

१. जगदीशचंद्र बोस कौन थे?
२. उनका जन्म कब और कहाँ हुआ?
३. प्रेसिडेन्सी कॉलेज की कौन-सी बात उनको अच्छी नहीं लगी?
४. वनस्पति तथा प्रकृति -विज्ञान के बारे में बोस जी के विचार क्या थे?
५. विज्ञान के क्षेत्र के लिए उनकी क्या देन है?
६. जगदीशचंद्र बोस का देहांत कब हुआ?

भाषा - बोध व्यावहारिक पत्र

चार दिन की छुट्टी माँगते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाध्यापक के नाम एक पत्र लिखिए:

प्रेषक:

सोनु . के
मनहल्ली रोड, नवोदय नगर
हासन - ५

सेवा में,

प्रधानाध्यापक
टी.एम.पी. स्कूल, शिवनगर,
हासन - ५

महोदय,

मैं आपके विद्यालय में छठी कक्षा 'अ' विभाग में पढ़नेवाली छात्रा हूँ। मेरी बहन की शादी इस महीने की तारीख ०४-०६-२०१७ को विजयपुरा में होनेवाली है। इसलिए मैं दिनांक ०३-०६-२०१७ से ०६-०६-२०१७ तक विद्यालय नहीं आ सकूँगी। आपसे सविनय प्रार्थना है कि मुझे चार दिन की छुट्टी प्रदान करें।

धन्यवाद

दिनांक: ०३-०६-२०१७

आपकी आज्ञाकारी छात्रा
सोनु.के